कहानी

# इस पार से उस पार

डॉ सुधा ओम ढींगरा

कल अलस्सबाह उसका फ़ोन आया- 'अनघा, तुम्हारे सबडिवीज़न से बाहर वाली सड़क, जो चौराहे का रूप लेती है, जिस चौराहे से तुम भिन्न-भिन्न दिशाओं पर जाने के लिए मुड़ती हो। प्लीज़ कल तीन और साढ़े तीन के बीच वहाँ से नहीं गुज़रना, कहीं नहीं जाना। सख़्त हिदायत देती हूँ।' मैंने उसकी हिदायत मानी। मैं हमेशा से उसके कहे की क़द्र करती रही हूँ। आज जिस समय उसने बाहर निकलने से मना किया, उस समय की मेरी डॉक्टर से अपॉइंटमेंट थी। ख़ैर मैंने कल ही उसे बदल कर दो दिन बाद की अपॉइंटमेंट करवा ली।

ठीक उसी समय जब मैंने वहाँ से गुज़रना था, सामान से लदे हुए बहुत बड़े ट्रकों की चौराहे के मोड़ से मुड़ते हुए टक्कर हुई, उस टक्कर में कई कारें उलट गईं। तीन लोगों की मौत हुई और कई ज़ख़्मी हो गए। मैं बच गई या यूँ कहूँ साँची ने सचेत करके मुझे बचा लिया।

यह घटना मुझे अतीत में, बचपन में ले गई। साँची और मेरे अतीत में।

उम्र के एक पड़ाव में चीज़ों को देखने और परखने का नज़रिया बदल जाता है। दृष्टिकोण में व्यापकता आ जाती है। परिपक्वता की उम्र में अतीत में झाँक कर देखें, तो कई बीती घटनाएँ, जिन्हें संयोग समझ कर टाल दिया गया था, नज़रअंदाज़ कर दिया गया था, वे घटनाएँ तो जीवन की एक कहानी होती हैं। परत दर परत बुनती, उधड़ती कहानी। जब कुछ घटित हो रहा होता है पता ही नहीं चलता, यह सब क्या हो रहा है?

बचपन में उसके साथ बहुत कुछ घटा, जिसे बड़े बुज़ुर्ग समझ नहीं पाए। महज़ संयोग मात्र कह कर उस पर तवज्जो नहीं दी। दरअसल कसूर उनका भी नहीं था। हर इंसान की सोचने, समझने और जिज्ञासा की एक सीमा होती है। सीमाओं के पार जाने, अपने भीतर डुबकी लगाने और भीतर से बाहर के संसार से परे वायवी दुनिया में तैरने कोई विरला ही जाता है। अक्सर समझ की पहुँच से बाहर की चीज़ों के लिए तर्क-कुतर्क देकर छुटकारा पा लिया जाता है। उसके साथ भी कुछ ऐसा ही किया गया। उसकी बात को कोई सुनना, समझना ही नहीं चाहता था। गहराई से कोई कुछ जानना ही नहीं चाहता था। सरलता से पलायन का मार्ग अपनाना सहज लगता है आस-पास के लोगों को। वही उन्होंने किया।

परिपक्वता में आकर अब साँची के जीवन के अद्भुत पहलुओं को समझ पाई हूँ। बचपन की कुछ घटनाओं का मूल्यांकन हुआ तो उसकी एक ऐसी कहानी हाथ लगी, जो अद्भुत है। कहानी के अंत में वह कइयों को अविश्वसनीय लगेगी, जैसे बचपन में अपनों ने उस पर विश्वास नहीं किया था। असल जीवन में कई बार बहुत कुछ ऐसा घटता है, जिसे बुद्धि समझ नहीं पाती, पर वह जीवन की एक अनबूझ, अनकही कहानी होती है..... इस लोक से परे.... पारलौकिक।

हरेक के जीवन के कुछ अनछुए, अनकहे, अलौकिक पहलू कई बार अछूते ही रह जाते हैं। उन पर बात कर लेना अच्छा रहता है... आज की घटना के बाद पता नहीं क्यों मुझे आपको उसकी कहानी सुनाने को मन हो रहा है... आप इस पर विश्वास करें या नहीं करें, यह मैं आप पर छोड़ती हूँ.....

साँची और मैं बचपन की सखियाँ हैं और बेस्ट फ्रेंड भी। भाग्य से कहें या संयोग से दोनों की शादी इस देश में हुई है...

गोल-मटोल, बड़ी -बड़ी आँखों वाली गोरी -चिट्टी, सुंदर, सलोनी साँची। आज भी उसकी सुंदरता में कोई कमी नहीं आई, उसे देख कर कई बार लोगों को यह कहते भी सुना है कि उसे ईश्वर से चिरयौवना का वरदान मिला हुआ है। बचपन में वह बेहद चंचल-नटखट थी। खेलने में फिसड्डी और पढ़ाई में अव्वल रहती थी। पता नहीं क्यों उसे बच्चों के साथ खेलना अच्छा नहीं लगता था, दूर बैठकर उन्हें खेलते देखने में उसे बहुत मज़ा आता।

वह बच्चों को खेलते देखकर अपनी एक दुनिया बसा लेती; जिसमें वह खो जाती। काल्पनिक चरित्रों की कल्पना करके उनसे बातें करती रहती।

साँची के साथियों को यह सब देख बहुत अजीब लगता। एक दिन उन्होंने साँची के माँ-बाप को उसका हवा में बातें करना या काल्पनिक किसी फ्रेंड से, जिनके नाम हर रोज़ बदल जाते थे, बातें करना बताया। साँची के माँ -बाप डॉक्टर थे; उन्होंने सोचा कि यह प्रिटेंड (ख़याली या काल्पनिक) गेम खेलती है जो कई बच्चे खेलते हैं। हर बच्चे की कल्पना और विचार शक्ति अलग होती है।

उस दिन तो अजीब बात हुई। वह सात बरस की होगी, जब एक दिन घर के सामने वाले चबूतरे पर बैठी वह मोहल्ले के मैदान में बच्चों को खेलते देख रही थी। तभी अचानक वह पिट्ठू खेल रहे बच्चों पर चिल्लाई- 'कमल, गली के मोड़ तक भाग कर मत जाना, तुम्हारा सिर फूट जाएगा।' उसकी बात सुनकर सभी बच्चे हँसने लगे।

साँची फिर भी कहती रही-'कमल तुम गली के मोड़ तक भाग कर मत जाना....मैंने देखा है... '

'साँची, चुप कर। तूने कहाँ देखा है.... ' रचना उसकी बड़ी बहन ने उसे डांटा था।

पलों में वहाँ कोलाहल मच गया। कमल भाग कर गली के मोड़ तक गया ही था कि, वहाँ मोड़ के पास एक मकान गिराया जा रहा था। दीवारें टूटने से ईंटें नीचे गिर रही थीं और एक ईंट ज़ोर से उछल कर कमल के सिर पर लगी। खून का फव्वारा फूट निकला। चारों ओर चीखें और शोर सुनाई देने लगा। जो बच्चे साँची की बात पर पहले हँसे थे, वे बच्चे बार-बार ज़ोर देकर कहने लगे-'साँची ने देखा था। साँची ने कहा था। कमल का सिर फूटे गा।'

कमल का परिवार उसे डॉक्टर के पास ले गया। साँची की कही बात मोहल्ले में चर्चा का केंद्र बन गई। साँची की दादी जी उसे घर के अंदर ले गई और गोद में लेकर बैठ गई। उन्होंने बड़े प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा- 'साँची तेरे साथी क्या कह रहे थे, क्या देखा तुमने?'

'दादी जी, मैंने देखा कमल भागता हुआ गली के मोड़ तक गया और उसका सिर फट गया।' साँची ने बड़े प्यार से अपने दादी जी को बताया।

'कैसे फटा सिर?' दादी जी ने फिर पूछा।

'पता नहीं मैंने तो सिर से खून बहते देखा तो कमल को कहा था, मत जाना उधर, पर वह माना नहीं।' साँची अपनी दादी जी की बहुत प्यारी थी, उनके गले में बाँहें डालकर अपनी बात कहती गई।

'तुमने ऐसा सोचा था साँची...' दादी जी ने पलट कर पूछा। वे साँची के सच को जानना चाहती थीं।

'नहीं दादी जी, मैंने देखा, जैसे पिक्चर चलती है। मेरी आँखों के सामने वैसा सब घूमा। 'सोचा नहीं'।' साँची ने 'सोचा नहीं' पर ज़ोर देकर कहा। दादी जी ने उसे कस कर अपने साथ भींच लिया।

'साँची, यह बस संयोग था, कमल के चोट तो लगनी थी। विधि का विधान था। भूल जा सब कुछ।' दादी जी ने उसके माथे को चूमते हुए कहा।

शाम ढले सब लोग घरों में चले गए। साँची ने जो देखा, उसकी चर्चा कम हो गई थी। कमल के चाचा-चाची हस्पताल से लौट आए। उन्होंने बताया कमल ठीक है, कोई ख़तरे वाली बात नहीं, बस खून की एक बोतल चढ़ानी पड़ी क्योंकि खून बहुत बह गया था।

जैसा कि अक्सर होता है लोगों की याददाश्त लम्बे समय तक नहीं रहती। बातों को जल्द ही भूल जाते हैं। साँची की कही बात को भी लोग शीघ्र ही भूल गए और जीवन अपनी रफ़्तार पर चलने लगा पर साँची के जीवन में बहुत परिवर्तन आ गया। शायद साँची के माँ-बाप ने डॉक्टरों से सलाह की और उन्होंने बताया कि साँची एक अद्भुत बच्ची है, जो आम बच्चों से अधिक बुद्धिमान है और उसकी बुद्धि का विकास भी आम बच्चों से अधिक है। साँची को जितना व्यस्त रखेंगे उतना ही काल्पनिक दुनिया से बाहर निकलेगी। कमल की घटना के बाद साँची को कत्थक डांस सिखाने वाले गुरु घर आने लगे। शास्त्रीय संगीत सिखाने वाले गुरु के पास वह जाने लगी। साँची बेहद व्यस्त हो गई और उसका चबूतरे पर बैठकर बच्चों को खेलते देखना बंद हो गया।

धीरे-धीरे साँची बड़ी हो गई। तेरह या चौदह साल की उम्र के मध्य में पहुँच गई। बेहद ख़ूबसूरत किशोरी के रूप में वह निखरी। जब राधा बन कर वह नाचती तो अलौकिक सुंदरी लगती। दादी जी उसे देख -देख कर खूब रीझतीं। पता नहीं क्यों उसकी चंचलता नटखटपन कहीं ग़ायब हो गया। वह एक धीर-गंभीर अंतर्मुखी किशोरी बन गई। बस अपने में खोई रहती। जैसे उससे कुछ छिन गया था। संयुक्त परिवार था। किसी के पास समय नहीं था उसकी इस मनोदशा की ओर ध्यान देने का।

वह समय रेडियो सुनने और किताबें पढ़ने का था। अंतर्जाल अभी आया नहीं था। साँची किताबें पढ़ने, शास्त्रीय संगीत और नृत्य का रियाज़ करने में व्यस्त रहती।

एक दिन उसने घर में धमाका कर दिया। रात्रि भोजन के समय उसने अपने पापा से कहा-'पापा जब आपके क्लिनिक में बहुत मरीज़ हों और अगर मोदी अंकल आएँ और आप को किसी काग़ज़ पर साइन करने को कहें, मरीज़ों की भीड़ के बावजूद आप बिना पढ़े, उस कागज़ पर साइन नहीं करेंगे। मैंने घर पर पुलिस को आते देखा और सब बहुत रो रहे थे।' भोजन करते हुए सबके हाथ रुक गए। साँची के पापा ने साँची की मम्मी की ओर देखा और आँखों ही आँखों में कुछ कहा।

'साँची, चुप कर। सबको आराम से खाना खाने दो। तुम्हारे पापा ऐसा क्यों करेंगे! तुम फालतू का सोचती रहती हो। तभी तो दिन में अंट-शंट सपने देखती हो।' माँ ने उसे डाँट दिया।

साँची बड़ी हो रही थी। उसके स्वाभिमान पर चोट लगी। वह खाने की मेज़ से उठ गई। खड़े होते हुए गुस्से से बोली-'सारा दिन पढ़ाई, रियाज़ से फुर्सत कहाँ मिलती है; जो मैं फालतू का सोच सकूँ! आप डॉक्टर होकर भी मुझे नहीं समझते तो और कौन समझेगा! मेरी तकलीफ़, मेरी मजबूरी समझें, यह डे ड्रीमिंग नहीं, सच में मेरी आँखों के आगे कुछ घूम जाता है...फिल्म जैसा।' कहते हुए वह रुआँसी-सी होकर वहाँ से चली गई।

दादी जी सिर पर हाथ रख कर बोले- 'चित्रा, मुझे तो डर लग रहा है, इसकी इन बातों से लोग इसे ग़लत समझेंगे। मेरी सोहनी कलावंती कुड़ी की शादी कैसे होगी!'

'बीजी, आप फ़िक्र मत करें। मैंने डॉक्टरों से बात की है। उनकी सलाह है कि साँची की इन बातों को इग्नोर किया जाए तो दृश्य आने अपने आप बंद हो जाएँगे। बस प्यार से नज़रअंदाज़ करें, गुस्सा होकर नहीं।' साँची के पापा ने चित्रा जी (साँची के मम्मी) की ओर देख कर कहा।

'डॉ. साहब मैं डर गई थी। डर गुस्से के रूप में साँची पर निकल गया।' चित्रा जी ने विनम्रता से कहा।

'किस बात से डर गई थीं? मैं साइन कर दूँगा।'
'जी।'
'आप ऐसा सोचती हैं?'
'आपसे ऐसा हो सकता है। दोस्त और दोस्ती के अलावा आपको और कुछ दिखता नहीं। डर लगना स्वाभाविक है।' इसके जवाब में साँची के पापा ने कुछ नहीं कहा, चुपचाप वहाँ से उठ गए।
साँची छटपटाकर रह गई। वह समझ नहीं पा रही थी कि अगर वह कुछ बताती है, जो दृश्यों उसे नज़र आते हैं, उसे सुनने और समझने की बजाय नज़रअंदाज़ क्यों किया जाता है?
दो महीने भी नहीं बीते होंगे कि एक दिन पुलिस, साँची के पापा के नाम सम्मन लेकर उनके घर आ गई। साँची के सतर्क करने के बावजूद उसके पापा ने उस कागज़ पर हस्ताक्षर कर दिए थे जो उनका दोस्त प्रदीप मोदी लेकर आया था। उस दिन क्लिनिक में भीड़ बहुत थी और प्रदीप मोदी ने उन्हें कहा कि वह बैंक से लोन ले रहा है, गवाही के लिए यहाँ साइन कर दें। दो लोग उसके साथ और भी थे। उसने कहा कि अगर डॉ. इंद्र पॉल, (साँची के पापा) लोन के उन पेपरों पर साइन कर दें तो वे दोनों गवाह भी साइन कर देंगे। मरीज़ों की भीड़ अधिक थी, उन्हें उन सबको देखना था। सूरज ढलने को था। कई मरीज़ काफी बीमार थे। जल्दी-जल्दी में कागज़ पर क्या लिखा है, बिना पढ़े, बिना सोचे उन्होंने हस्ताक्षर कर दिए। डॉ. इंद्र पॉल अपने दोस्त पर बेहद विश्वास करते थे। हस्ताक्षर करने के पहले वह साँची की बात भूल गए और साइन करने के बाद वह इस क़िस्से को भूल गए कि उन्होंने साइन किए थे। पुलिस के आने पर उन्हें सब याद आया।
पुलिस ने जो बताया, उसे सुनकर सबकी हवाइयाँ उड़ गईं। प्रमोद मोदी जो डॉ. इंद्र पॉल के बचपन का दोस्त था, जिसे वह अपना लंगोटिया यार कहते थे, उसी ने उन्हें धोखा दिया। उस कागज़ पर लिखा था कि प्रमोद मोदी ने फलाँ-फलाँ से पच्चीस लाख रुपये जो उधार लिए हैं, अगर प्रमोद मोदी उन्हें नहीं चुका पाया तो डॉ. इंद्र पॉल चुकाएँगे। दो गवाहों के सामने हस्ताक्षर करके पच्चीस लाख चुकाने की स्वीकृति दी गई थी। डॉ. इंद्र पॉल के हस्ताक्षरों के साथ दो और लोगों के साइन भी थे। रिश्वत देकर प्रमोद मोदी ने वे कागज़ पक्के करवा लिए थे। उसके बाद प्रमोद मोदी गायब हो गया। कहीं भूमिगत हो चुका था। क़र्ज़ लेने वालों ने अपनी वसूली के लिए साँची के पापा पर केस कर दिया। पुलिस उसी केस के लिए कोर्ट में उपस्थित होने के सम्मन लेकर आई थी।
घर में रोना-धोना शुरू हो गया। अब साँची की बात की ओर सबने ध्यान दिया। दादी जी बार-बार कहने लगी- 'मेरी साँची ने रोका था, पर इन्द्रा (साँची के पापा को दादी जी ऐसे ही बुलाती थीं) तुमने ध्यान नहीं दिया।' साँची के पापा भी इस सोच में पड़ गए, कैसे उनसे इतनी बड़ी ग़लती हो गई! पर अंत में इसी बात पर सब शांत हो गए कि जो होना होता है, हो कर रहता है।
केस दूसरे शहर में किया गया था, जहाँ क़र्ज़ लेने वाले रहते थे। कई बार दो दिन आने-जाने में लग जाते थे। जब कभी पेशी शाम की पड़ती थी। एक रात होटल में रहना पड़ता। दो वर्ष केस चला। महीने में कई दिन क्लिनिक बंद रहता। मरीज़ दूसरे डॉक्टरों के पास जाने लगे। घर की आर्थिक व्यवस्था हिल गई। तनाव अलग था।
साँची के पापा ने अपनी बेगुनाही साबित करने की बहुत कोशिश की, कभी जज बदल जाता, तो कभी तारीख़ पड़ जाती। क़र्ज़ लेने वाली पार्टी के वकील ने तंग करना शुरू कर दिया। महीने में कई-कई बार तारीख डलवा लेता। साँची के पापा ईमानदार इंसान थे, उन्हें अपनी सच्चाई पर भरोसा था। उसी विश्वास के साथ साँची के पापा उस समय को परीक्षा की घड़ी समझ कर धैर्य पूर्वक काट रहे थे। परिवार भी साथ दे रहा था।
एक दिन जब डॉ. इंद्र कोर्ट में अपनी पेशी के लिए जाने लगे तो साँची ने अचानक कहा-'पापा आज आपको कोई मिलेगा, जिससे आप अपना केस जीत जाएँगे।' सारे परिवार ने साँची की ओर देखा। डॉ. इंद्र ने साँची के सिर पर हाथ फेरा। दादी जी ने अपने बेटे के मुँह में दही और चीनी का चमच डाला।
डॉक्टर पॉल दो घंटे बस में सफ़र करके उस शहर में अपनी पेशी के लिए पहुँचते थे। उस दिन जब वे बस में चढ़े तो बस में सिर्फ़ एक ही सीट ख़ाली थी। बस पकड़ने में देरी हो गई थी। वे उस खाली सीट पर बैठ गए। बैठने के बाद उन्होंने महसूस किया कि उनके साथ वाली सीट पर जो व्यक्ति बैठा है, वह सूट-बूट पहने हुए बहुत ही संभ्रांत व्यक्ति लग रहा था। वह जॉन ओ हारा की पुस्तक ' फ्रॉम द टेरेस' पढ़ रहा था। डॉक्टर पॉल ने बस की सीट पर आराम से बैठते हुए कहा-'मैं यह किताब पढ़ चुका हूँ बहुत अच्छी किताब है।' उन व्यक्ति ने धीरे-से आँख उठाई और डॉ.पॉल की ओर देख कर बस -'जी' कहा और चुपचाप अपनी किताब में मग्न हो गया।
डॉ. इंद्र ने ज्यान पॉ सात्रा की पुस्तक 'द ऐज ऑफ़ रीज़न' अपने बैग से निकाली और पढ़ने लगे।
कुछ देर बाद दूसरे व्यक्ति ने बात शुरू की- 'लगता है, आपको भी पढ़ने का शौक है।'
'जी सारा दिन मरीज़ों को देखने के बाद, किताबें बहुत राहत देती हैं।'
'तो आप डॉक्टर हैं।'
'जी।'
'किस हॉस्पिटल में?'
'नहीं मेरे अपने क्लिनिक हैं।'
'कहाँ?'
'जालंधर, मॉडल टाउन में।'
'ओह, तो बटाला किसी काम से जा रहे हैं?'

'जी, जा कौन जा रहा है, घसीटा जा रहा हूँ। दोस्ती की सज़ा भुगत रहा हूँ।'

'क्या मतलब, मैं समझा नहीं?'

साँची के पापा ने शुरू से आख़िर तक सारी बात बता दी और लंबी साँस लेकर कहा-'मानता हूँ मेरी ग़लती है, मुझे साइन करने से पहले पेपर देखने चाहिए थे। मेरे साथ तो विश्वासघात हुआ है। दोस्त पर विश्वास करने की सज़ा मिली है। कानून के रख वालों पर और भी दुःख हो रहा है। मेरा दोस्त ग़ायब है, तो उसका घर, ज़मीनों, दुकानों को बेच कर उससे पैसा वसूलें। उसके पास कोई प्रॉपर्टी नहीं होती तो मुझे घसीटा जाता, मैं उसे जायज़ मानता; क्योंकि मैंने साइन किए हैं। उसके पास बेइंतिहा प्रॉपर्टी है। साहब, मुझ से अधिक उसके पास पैसा है। पुलिस उसे तो ढूँढ़ नहीं रही और उसके परिवार से भी कोई पूछताछ नहीं की जा रही। मुझे तंग किया जा रहा है। ताकि मैं परेशान होकर पैसा दे दूँ। दो साल में इतनी पेशियाँ पड़ी हैं, आधा समय क्लीनिक बंद रहा है। मरीज़ अलग दुखी होते हैं। भगवान् जाने सब में क्या मिली भगत है! मेरी समझ में नहीं आ रहा।' यह कह कर वे चुप हो गए। कुछ देर दोनों चुप रहे।

'अपनी व्यथा कह कर आपका सफर भी ख़राब कर दिया। क्षमा चाहता हूँ।' साँची के पापा ने नम्रता से कहा।

'डॉ. साहब कैसी बातें करते हैं! मैं तो आज पहली बार ही इस बस में सफर कर रहा हूँ, अच्छा समय बीत रहा है।'

'सच कहूँ तो साहब, मन बहुत व्यथित है। मैं और मेरी पत्नी, वह भी डॉक्टर है, हमने एक आदर्श भारत का सपना लेकर जवानी जेलों में काट दी। दो सालों में कानून से होता खिलवाड़ देखा, मन मसोस कर रह गया हूँ। क्या इस भारत के लिए हमने जवानी लगा दी?'

'तो आप फ्रीडम फाइटर हैं। आपने आज़ादी की लड़ाई में हिस्सा लिया। आपके दर्द को महसूस कर सकता हूँ। गुड लक! बटाला आ गया, हम दोनों को उतरना है।' उस सज्जन ने साँची के पापा से हाथ मिलाया और चला गया।

कचहरी के अहाते में पहुँचकर, डॉ.पॉल के वकील ने बताया कि आज एक नया जज इस कोर्ट में आ रहा है। आज ही उसने ज्वाइन किया है। सुना है बड़ा कड़क है, देखते हैं क्या होता है?

जब डॉ. पॉल की बारी आई तो कचहरी के अंदर जाते ही उन्होंने उसी सज्जन को जज की कुर्सी पर बैठे देखा तो हैरान रह गए। जज ने दस मिनट के अंदर केस खारिज कर दिया, यह कह कर कि पहले प्रमोद मोदी के घर, ज़मीनों और दुकानों की कुर्की की जाए। उससे लेनदार पार्टी अपना पैसा वसूल करे। प्रमोद मोदी को ढूँढ़ा जाए। उसके कर्ज़े का देनदार उसका परिवार है, डॉ पॉल नहीं। दो साल से एक शरीफ आदमी को तंग किया जा रहा है, जिसके साथ खुद प्रमोद मोदी ने धोखा किया है। धोखा-धड़ी का केस भी प्रमोद मोदी पर डाला जाए।

साँची के पापा केस जीत गए। उन्होंने जज को हाथ जोड़ कर नमस्ते की और चैन की साँस ली।

इसके बाद साँची ने कभी दृश्य देखने की बात नहीं की। साँची एक कंप्यूटर इंजीनियर बनी और शादी के बाद विदेश आ गई।

विदेश में आकर पहली बार उसने कॉल करके मुझे रोका था और एक दुर्घटना का शिकार होने से बचा लिया। साँची के जन्म से ही उसकी अंतर्दृष्टि, जिसे इनर आई कहते हैं, और लोगों से ज़्यादा डेवेलप हो चुकी थी, साँची को इन्ट्यूशनज़ होती हैं। काश ! उसका परिवार उसकी इस प्रतिभा से परिचित हो पाता....

000

संपर्क-101 Guymon Ct., Morrisville, NC-27560, USA
मोबाइल-919-801-0672 sudhadrishti@gmail.com

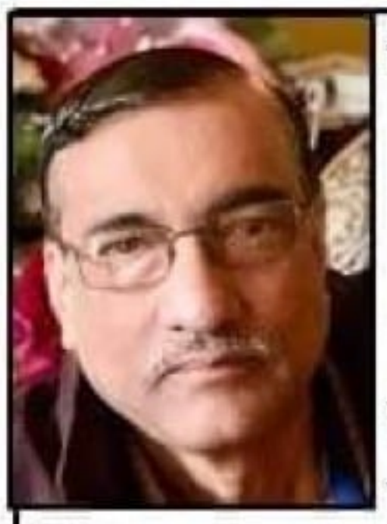

लघुकथा

## जड़ें

### डॉ.अखिलेश शर्मा

वी.आई.पी.रोड़ होने से सड़क को चौड़ी करने की प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी गई थी। आसपास के सभी वृक्षों को हटाया जाना था। छोटे-छोटे पौधों से लेकर बड़े वृक्ष सभी भयभीत थे।

सुहानी शाम थी। बड़े वृक्षों की टहनियाँ जहाँ हवा से अठखेलियाँ कर रही थीं, वहीं छोटे-बड़े पौधे और उन पर लगे रंग-बिरंगे सुन्दर फूल वातावरण में भीनी-भीनी खुशबू बिखेर रहे थे।

पौधे बहुत उदास थे। उन्हें लगाए अभी ज्यादा समय नहीं हुआ था। उनके सामने भविष्य बहुत लंबा था तथा जब उन्हें लगाया जा रहा था वे अत्यधिक उत्साहित थे।

उन्हें मालूम हुआ कि वृक्षों को तो किन्हीं अन्य स्थानों पर ट्रांस्प्लांट किया जा रहा है किंतु उनकी ओर किसी का ध्यान ही नहीं है। सभी पौधे दुःख मिश्रित क्रोध में सरोबार थे। उनके ऊपर निर्दयतापूर्वक बुलडोज़र चला कर उन्हें रौंद दिया जाएगा। यह उन्हें स्पष्ट महसूस हो रहा था।

"हमें भी यदि कहीं अन्यत्र स्थानांतरित किया जाता तो इन मनुष्यों का क्या बिगड़ जाता?" एक पौधे ने सिसकते हुए कहा।

एक तुलनात्मक रूप से थोड़े बड़े पौधे ने लंबी सांस ली और उन्हें कारण बताते हुए कहा--"हमारे और वृक्षों मे अंतर यही है कि उनकी जड़ें जमीन में बहुत गहरी हैं।"

000

296,कालानी नगर एयरपोर्ट रोड़,इन्दौर 452005
Mail --drakhileshsharma9@gmail.com